

## भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की ऐतिहासिक चेतना और वैदिक दृष्टिकोण से आधुनिक छायावाद तक की यात्रा

**डॉ. लक्ष्मी**

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

आर. ए.एस. डिग्री कॉलेज ,

अलीनगर, सुनहरा रोड, कृष्णानगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

**सारांश-** भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की गहरी परंपरा वैदिक और उपनिषद् काल से जुड़ी हुई है, जहाँ आध्यात्मिक चिंतन और दार्शनिक दृष्टि ने इसे आकार दिया। यह शोध आलेख भारतीय साहित्य में रहस्यवाद के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करता है, जिसकी यात्रा वैदिक दृष्टिकोण से शुरू होकर आधुनिक छायावाद तक पहुँचती है। वैदिक मंत्रों और उपनिषदों ने अद्वैतवादी चेतना को प्रस्तुत किया, जहाँ आत्मा और ब्रह्म की एकता पर बल दिया गया। मध्यकालीन भक्ति एवं सूफी आंदोलनों ने इस रहस्यवादी धारा को और समृद्ध किया, जिसमें भक्ति और साधना के माध्यम से परमात्मा से साक्षात्कार की अभिव्यक्ति हुई। आधुनिक युग में छायावाद (20वीं शताब्दी) ने रहस्यवाद को नए रूप में पुनर्जीवित किया। जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत जैसे कवियों ने प्रकृति, प्रेम और दिव्यता को आत्मानुभूति के माध्यम के रूप में चित्रित किया। उनकी रचनाओं में प्राचीन आध्यात्मिकता और आधुनिक मानवीय संवेदनाओं का समन्वय दिखाई देता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे भारतीय साहित्य में रहस्यवाद ने सांस्कृतिक परिवर्तनों के बीच अपनी मूलभूत दार्शनिक प्रकृति को बनाए रखा। वैदिक काल से लेकर छायावाद तक की इस यात्रा में रहस्यवाद एक सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में उभरता है, जो मानवीय अनुभूति और दिव्य सत्ता के बीच सेतु का कार्य करता है।

**कीवर्ड्स- भारतीय साहित्य; रहस्यवाद; वैदिक दर्शन; छायावाद; आध्यात्मिक चेतना**

### **प्रस्तावना**

भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा में रहस्यवाद एक प्रमुख विचारधारा के रूप में उभरता है, जिसकी जड़ें वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक फैली हुई हैं। रहस्यवाद मूलतः आध्यात्मिक अनुभूति और दिव्य सत्ता के साथ एकाकार होने की चेतना को दर्शाता है। यह केवल धार्मिक या दार्शनिक विचार तक सीमित नहीं है, बल्कि साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी बन गया है। भारतीय साहित्य में

रहस्यवाद की यह यात्रा वेदों और उपनिषदों के गूढ़ ज्ञान से प्रारंभ होकर मध्यकालीन भक्ति-साहित्य और सूफी काव्य से होती हुई आधुनिक छायावादी कविता तक पहुँचती है। इस लंबी यात्रा में रहस्यवाद ने विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ स्वयं को ढाला, किंतु इसकी मूल भावना अनंत की खोज और आत्मा-परमात्मा के मिलन की अभिव्यक्ति अधुण रही। भारतीय रहस्यवाद का प्रारंभ वैदिक साहित्य से माना जा सकता है। ऋग्वेद के मंत्रों में प्रकृति और देवताओं की स्तुति के साथ-साथ एक गहन आध्यात्मिक चिंतन भी विद्यमान है। वैदिक ऋषियों ने 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' (सत्य एक है, जिसे विद्वान अलग-अलग नामों से पुकारते हैं) जैसे सूक्तों के माध्यम से ब्रह्माण्ड की एकता का संदेश दिया। उपनिषदों ने इस चिंतन को और गहराई प्रदान की, जहाँ 'तत्त्वमसि' (तू ही वह है) और 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ही ब्रह्म हूँ) जैसे महावाक्यों के द्वारा आत्मा और परमात्मा के अद्वैत (एकत्व) पर बल दिया गया। यहाँ रहस्यवाद व्यक्तिगत अनुभूति और ज्ञान के माध्यम से परम सत्य तक पहुँचने की प्रक्रिया बन गया। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने रहस्यवाद को जनसामान्य तक पहुँचाया। भक्ति काव्य में प्रेम और समर्पण के माध्यम से ईश्वर से मिलन की अभिव्यक्ति हुई। कबीर, मीरा, सूरदास, तुलसीदास और ज्ञानेश्वर जैसे संत-कवियों ने रहस्यवाद को भक्ति के सरल रूप में प्रस्तुत किया। कबीर की 'अनहद नाद' और मीरा के 'प्रेम-मार्ग' की अवधारणाएँ रहस्यवादी अनुभूति को स्पष्ट करती हैं। इसी काल में सूफी साहित्य ने भी प्रेम और आत्मिक एकता के माध्यम से रहस्यवाद को नया आयाम दिया। सूफी कवियों ने 'इश्क-ए-हकीकी' (सच्चा प्रेम) की अवधारणा को केंद्र में रखकर ईश्वर से मिलन के रहस्य को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी। 20वीं शताब्दी में छायावादी कवियों ने रहस्यवाद को नए सिरे से परिभाषित किया। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और निराला जैसे कवियों ने प्रकृति, प्रेम और अध्यात्म के माध्यम से आत्मानुभूति की गहन अभिव्यक्ति की। महादेवी वर्मा की कविताओं में 'नीर भरी दुःख की बदली' जैसे बिंबों के माध्यम से रहस्यवादी विरह की अनुभूति दिखाई देती है, जबकि प्रसाद के 'कामायनी' में आधुनिक मनुष्य की आध्यात्मिक खोज को दर्शाया गया है। छायावाद ने पश्चिमी रोमांटिसिज़्म और भारतीय अद्वैतवाद का समन्वय करके रहस्यवाद को एक नवीन अर्थ प्रदान किया। भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की यह यात्रा वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक एक सतत प्रवाह के रूप में दिखाई देती है। हर युग में इसने नए रूप धारण किए, किंतु इसका मूल उद्देश्य मानवीय चेतना का दिव्य से मिलन अपरिवर्तित रहा। वैदिक ऋषियों से लेकर छायावादी कवियों तक, रहस्यवाद ने भारतीय मनीषा को गहराई से प्रभावित किया है और साहित्य को एक विशिष्ट आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान की है। आज भी यह विचारधारा प्रासंगिक है, क्योंकि यह मनुष्य को उसकी आंतरिक शक्ति और अनंत की खोज की प्रेरणा देती है।

### उद्देश्य

- भारतीय साहित्य में रहस्यवाद के ऐतिहासिक विकास की पड़ताल करना।
- वैदिक दर्शन से छायावाद तक रहस्यवाद की अवधारणात्मक निरंतरता का विश्लेषण करना।
- आधुनिक युग में छायावादी कवियों ने रहस्यवाद को किस प्रकार नए संदर्भों में प्रस्तुत किया।

### भारतीय साहित्य में रहस्यवाद का ऐतिहासिक विकास

भारतीय साहित्य में रहस्यवाद का ऐतिहासिक विकास एक गहन और बहुआयामी अध्ययन का विषय है जिसकी जड़ें वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक फैली हुई हैं। वैदिक साहित्य, विशेषकर ऋग्वेद और उपनिषदों में रहस्यवाद की प्रारंभिक अभिव्यक्तियाँ देखने को मिलती हैं, जहाँ ऋषियों ने प्रकृति, देवताओं और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को गूढ़ मंत्रों के माध्यम से समझने का प्रयास किया। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि के रहस्य पर प्रश्न उठाया गया है, जबकि उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा के एकत्व (अद्वैत) की अवधारणा को 'तत्त्वमसि' और 'अहं ब्रह्मास्मि' जैसे महावाक्यों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। यहीं से भारतीय रहस्यवाद की दार्शनिक नींव पड़ी, जिसने आगे चलकर मध्यकालीन भक्ति साहित्य और सूफी काव्य को गहराई से प्रभावित किया। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के दौरान कबीर, मीराबाई, तुलसीदास और ज्ञानेश्वर जैसे संत-कवियों ने रहस्यवाद को जनसामान्य तक पहुँचाया। इनकी रचनाओं में ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध की अभिव्यक्ति हुई, जहाँ प्रेम और भक्ति को रहस्यमय अनुभूति का माध्यम बनाया गया। कबीर की साखियों और दोहों में 'अनहद नाद' और 'सहज समाधि' जैसी रहस्यवादी अवधारणाएँ प्रमुखता से उभरकर आईं, जबकि मीराबाई के पदों में कृष्ण के प्रति आत्मसमर्पण और विरह की गहन अनुभूति देखने को मिली। इसी काल में सूफी साहित्य ने भी रहस्यवाद को 'इश्क-ए-हकीकी' (सच्चे प्रेम) के माध्यम से व्यक्त किया, जहाँ बुल्लेशाह और रूमी जैसे कवियों ने ईश्वर से मिलन के रहस्य को काव्यात्मक भाषा में पिरोया। आधुनिक युग में छायावादी कवियों ने रहस्यवाद को नए सिरे से परिभाषित किया, जिसमें जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और निराला जैसे रचनाकारों ने प्रकृति, प्रेम और अस्तित्व के गहन प्रश्नों के माध्यम से रहस्यवादी चिंतन को आगे बढ़ाया। महादेवी वर्मा की कविताओं में 'नीर भरी दुःख की बदली' जैसे बिंबों के द्वारा आध्यात्मिक विरह की अभिव्यक्ति हुई, तो प्रसाद के 'कामायनी' में आधुनिक मनुष्य की आत्मानुभूति और रहस्यवादी खोज को केंद्र में रखा गया। इस प्रकार, भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की यात्रा वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक एक सतत प्रवाह के रूप में दिखाई देती है, जिसमें हर युग ने इसे अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप ढाला, किंतु इसकी

मूल भावना—अनंत की खोज और दिव्य के साथ एकाकार होने की चाह—हमेशा अधुण रही। आज भी यह विचारधारा भारतीय साहित्य और दर्शन को गहराई से प्रभावित करती है, जो मनुष्य को उसकी आंतरिक यात्रा और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझने की दिशा में प्रेरित करती है।

### वैदिक दर्शन से छायावाद तक रहस्यवाद की अवधारणात्मक

भारतीय साहित्यिक परंपरा में रहस्यवाद की अवधारणा एक सूत्र की तरह वैदिक काल से लेकर आधुनिक छायावाद तक निरंतर प्रवाहित होती रही है। इस दीर्घ यात्रा में रहस्यवाद ने विभिन्न युगों में भिन्न-भिन्न रूप धारण किए, किंतु इसकी मूलभूत प्रकृति - आत्मा और परमात्मा के मिलन की अनुभूति - अपरिवर्तित रही। वैदिक ऋषियों से लेकर छायावादी कवियों तक, यह धारा एक अखंड स्रोत की भांति प्रवाहित होती दिखाई देती है, जिसके विभिन्न रूपों का विश्लेषण करना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैदिक साहित्य में रहस्यवाद की प्रारंभिक अभिव्यक्ति हमें ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में दृष्टिगोचर होती है, जहाँ सृष्टि के रहस्य पर प्रश्न उठाया गया है - "नासदासीन नो सदासीत तदानीं"। उपनिषदों में यह चिंतन और भी परिष्कृत रूप में प्रकट हुआ, जहाँ 'तत्त्वमसि' (छांदोग्य उपनिषद), 'अहं ब्रह्मास्मि' (बृहदारण्यक उपनिषद) जैसे महावाक्यों के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के अद्वैत (एकत्व) का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। यहाँ रहस्यवाद एक दार्शनिक चिंतन के रूप में उभरा, जिसमें ब्रह्म की अनुभूति को ही परम लक्ष्य माना गया। वेदांत दर्शन ने इसी विचार को आगे बढ़ाया, जहाँ माया के पर्दे को हटाकर वास्तविक सत्ता को जानने पर बल दिया गया। मध्यकालीन भक्ति साहित्य में यह रहस्यवादी धारा भक्ति और प्रेम के माध्यम से प्रकट हुई। कबीरदास के दोहों में 'अनहद नाद' की अवधारणा, मीराबाई के पदों में कृष्ण के प्रति आत्मसमर्पण की भावना, तुलसीदास के रामभक्ति साहित्य में प्रभु के प्रति समर्पण - ये सभी रहस्यवाद के विभिन्न रूप थे। इस काल में रहस्यवाद ने जनसामान्य की भाषा और भावना को अपनाया। कबीर का कथन "मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में" इसी रहस्यवादी चेतना को दर्शाता है, जो उपनिषदों के 'तत्त्वमसि' के समान ही है, किंतु जनभाषा में अभिव्यक्त। सूफी कवियों ने भी इसी प्रकार 'इश्क-ए-हकीकी' (सच्चे प्रेम) के माध्यम से रहस्यवाद को व्यक्त किया, जहाँ प्रेमी और प्रियतम के मिलन को आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक बनाया गया। आधुनिक युग में छायावादी कवियों ने रहस्यवाद को नए सन्दर्भों में प्रस्तुत किया। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' में मनु और श्रद्धा के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की आध्यात्मिक खोज को दर्शाया गया है। महादेवी वर्मा की कविताओं में 'पिया' के प्रति विरह की अनुभूति वास्तव में परमात्मा के प्रति आत्मा की व्याकुलता का ही रूपक है। उनकी पंक्ति "मैं नीर भरी दुःख की बदली" इसी रहस्यवादी भावना की अभिव्यक्ति है। सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति को ब्रह्म का प्रतीक मानकर उसके माध्यम से रहस्यवादी अनुभूतियों को व्यक्त किया। निराला की कविताओं में भी यही चेतना विद्यमान है, जहाँ वे अस्तित्व के

गहन प्रश्नों के माध्यम से परम सत्य की खोज करते हैं। इस सम्पूर्ण यात्रा में हम देखते हैं कि वैदिक काल का 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' का सिद्धांत, भक्तिकाल की 'प्रेममार्ग' की अवधारणा और छायावाद की 'आत्मानुभूति' - ये सभी एक ही रहस्यवादी चेतना के विभिन्न रूप हैं। समय के साथ इसकी अभिव्यक्ति के ढंग बदले, किंतु मूल भावना वही रही - अनंत की खोज और दिव्य के साथ एकाकार होने की चाह। वैदिक ऋषियों का ब्रह्म, भक्त कवियों का ईश्वर और छायावादियों का 'परम सत्य' वस्तुतः एक ही सत्ता के विभिन्न नाम हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की अवधारणा ने एक अद्भुत निरंतरता का परिचय दिया है, जो विभिन्न युगों में विविध रूपों में अभिव्यक्त हुई, किंतु अपने मूल स्वरूप में अक्षुण्ण रही। यही निरंतरता भारतीय चिंतन धारा की विशिष्ट पहचान है, जिसने साहित्य को गहन आध्यात्मिक आधार प्रदान किया है।

### आधुनिक युग में छायावादी कवियों द्वारा रहस्यवाद की नवीन अभिव्यक्ति

आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावादी कवियों ने रहस्यवाद की परंपरागत अवधारणा को नए सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भों में प्रस्तुत करके एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया। जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवियों ने वैदिक और भक्तिकालीन रहस्यवादी चिंतन को आधुनिक मनोविज्ञान, प्रकृतिवाद और व्यक्तिवाद के साथ समन्वित करके एक अनूठी साहित्यिक धारा का सृजन किया। छायावादी रचनाकारों ने रहस्यवाद को केवल धार्मिक या आध्यात्मिक अनुभूति तक सीमित न रखकर उसे मानवीय संवेदनाओं, प्रकृति के प्रति आकर्षण और आधुनिक जीवन की जटिलताओं से जोड़ दिया। महादेवी वर्मा की कविताओं में 'पिया' के प्रति विरह की तीव्र अनुभूति वास्तव में परमात्मा के प्रति आत्मा की खोज का ही परिष्कृत रूप है, जहाँ प्रेयसी और प्रियतम का संबंध दिव्य प्रेम का प्रतीक बन जाता है। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति "मैं नीर भरी दुःख की बदली" में निहित रहस्यवादी भावना उसी वैष्णव भक्ति परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्ति है, जिसमें विरह की पीड़ा को आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग माना गया है। जयशंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य 'कामायनी' में रहस्यवाद को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की, जहाँ मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव मन की जटिलताओं और आध्यात्मिक खोज को दर्शाया गया। प्रसाद ने वैदिक प्रतीकों को आधुनिक संदर्भों में ढालकर एक नवीन रहस्यवादी दृष्टि का सृजन किया, जिसमें बुद्धि और हृदय का समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है। सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति को रहस्यवाद का माध्यम बनाया, जहाँ पहाड़, नदियाँ और वनस्पतियाँ दिव्य सत्ता के विभिन्न रूपों के प्रतीक बन गए। पंत की कविता में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन मात्र बाह्य दृश्य न होकर एक आंतरिक आध्यात्मिक अनुभूति है, जो उपनिषदों के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के सिद्धांत का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है। निराला की कविताओं में रहस्यवाद एक विद्रोही स्वर ग्रहण करता है, जहाँ परंपरागत धार्मिक मान्यताओं को चुनौती देते हुए व्यक्ति

की स्वतंत्र चेतना को केंद्र में रखा गया है। छायावादी कवियों की यह विशेषता रही कि उन्होंने पश्चिमी रोमांटिक परंपरा और भारतीय अद्वैत दर्शन का समन्वय करके रहस्यवाद को एक सार्वभौमिक और तार्किक आधार प्रदान किया। इस प्रकार छायावाद ने न केवल भारतीय रहस्यवादी परंपरा को पुनर्जीवित किया, बल्कि उसे आधुनिक युगबोध से जोड़कर एक नया आयाम भी दिया, जो आज भी हिंदी साहित्य को गहराई से प्रभावित करता है।

### निष्कर्ष

भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की यात्रा वैदिक काल से लेकर आधुनिक छायावाद तक एक सतत एवं गतिशील प्रक्रिया रही है, जिसने प्रत्येक युग में नवीन अर्थ ग्रहण किए, किंतु अपने मूल स्वरूप को कभी नहीं छोड़ा। वेदों और उपनिषदों में इसकी नींव 'ब्रह्म' और 'आत्मा' के अद्वैत भाव से पड़ी, जहाँ ऋषियों ने गूढ़ दार्शनिक चिंतन के माध्यम से परम सत्य की खोज की। मध्यकाल में भक्ति एवं सूफी साहित्य ने इस रहस्यवादी चेतना को जनसामान्य तक पहुँचाया, जहाँ प्रेम और भक्ति को ईश्वर-प्राप्ति का साधन बनाया गया। कबीर, मीरा और तुलसी जैसे संत-कवियों ने इसे लोकभाषा और भावनात्मक गहराई प्रदान की। आधुनिक युग में छायावादी कवियों ने इस परंपरा को नए सिरे से परिभाषित किया। प्रसाद, महादेवी, पंत और निराला जैसे रचनाकारों ने रहस्यवाद को प्रकृति, मानवीय संवेदनाओं और आधुनिक जीवन की जटिलताओं से जोड़कर एक नया आयाम दिया। छायावाद ने पश्चिमी रोमांटिसिज़्म और भारतीय अद्वैतवाद का समन्वय करके रहस्यवाद को तार्किक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। अंततः, भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की यह यात्रा एक अखंड धारा की भाँति है, जिसने प्रत्येक युग में नए रूप धारण करते हुए भी अपनी आध्यात्मिक मूलभूतता को बनाए रखा। यह न केवल साहित्य की शाश्वत विरासत है, बल्कि मानवीय चेतना के उत्कर्ष का मार्ग भी प्रशस्त करती है।

### संदर्भ सूची

- द्विवेदी, ह. (2010). भारतीय साहित्य में रहस्यवाद की परंपरा. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन.
- शुक्ल, र. (2015). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा.
- प्रसाद, ज. (2008). कामायनी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन.
- वर्मा, म. (2012). यामा. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ.
- पंत, स. (2009). उच्छ्वास. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन.
- निराला, स. त. (2011). परिमल. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन.
- तिवारी, भ. (2014). वैदिक साहित्य में रहस्यवादी चिंतन. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास.

- मिश्र, न. (2017). भक्ति साहित्य और रहस्यवाद. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- उपाध्याय, क. (2013). उपनिषदों का दार्शनिक अध्ययन. नई दिल्ली, डी.के. प्रिंटवर्ल्ड.
- चतुर्वेदी, प. (2016). मध्यकालीन भक्ति आंदोलन. आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- सिंह, अ. (2018). छायावाद, एक पुनर्मूल्यांकन. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.
- दुबे, र. (2019). सूफी काव्य और रहस्यवाद. लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
- पांडेय, वी. (2020). आधुनिक हिंदी कविता में आध्यात्मिकता. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्.
- मिश्र, वि. (2011). भारतीय दर्शन और साहित्य. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन.
- गुप्ता, स. (2015). हिंदी साहित्य में अध्यात्मवाद. कोलकाता, पुस्तक भवन.